कलीसिया के बढ़ने की चुनौती

परमेश्वर चाहता है कि कलीसिया बढ़े। इस सज़्बन्ध में, कलीसिया के बढ़ने के लिए कलीसिया के अधिकतर अगुओं की इच्छा परमेश्वर की इच्छा से मेल खाती है।

अतीत में कलीसिया बढ़ी है। 1964 में, बुलेटिन लेखों में दावा किया गया था कि ''अमेरिकी कलीसियाओं की वर्ष पुस्तक के अनुसार, मसीह की कलीसियाएं सबसे तेजी से बढ़ने वाली हैं और गत बीस वर्ष से बढ़ रही हैं।'' वर्ष पुस्तक में संकेत दिया गया था कि 1941 से 1961 तक कलीसिया 580 प्रतिशत तक बढ़ी थी![1]

परन्तु आंकड़ों से संकेत मिलता है कि अमेरिका में प्रभु की कलीसिया के तीव्र विकास का समय खत्म हो गया था और उसके बाद यह समतल या थोड़ा सी कम भी होने लगी थी। केवल हाल ही के वर्षों में यह खबर आई है कि अमेरिका में मसीह की कलीसियाएं, पूर्ण तौर पर फिर से विकास करने लगी हैं।[2]

प्रभु की कलीसिया में अगुओं को अज़्सर इस सच्चाई का सामना करना पड़ रहा है कि जिन मण्डलियों की वे अगुआई करते हैं वे बढ़ नहीं रही हैं। बहुत सी कलीसियाएं कई वर्षों बाद भी उतनी ही रहती हैं, और कई तो इस तथ्य के बावजूद कि अगुवे कलीसिया को बढ़ता देखना चाहते हैं, कुछ कलीसियाएं कम होती जाती हैं। वे मण्डलियां भी जो आंकड़ों के हिसाब से (सदस्यता, उपस्थिति और चंदे में) बढ़ रही हैं शायद ''वास्तविक'' रूप से नहीं बढ़ रही हैं। हो सकता है कि उनमें मसीह की अन्य कलीसियाओं से सदस्य आ रहे हों, पर किसी को बपतिस्मा न दे रहे हों, जिससे स्थानीय कलीसिया को तो लाभ होता है, पर उद्धार पाने वालों की संज़्या नहीं बढ़ती।

कलीसिया के विकास की चुनौती इस बात का पता लगाना है कि धीमी गति के विकास या बिल्कुल विकास न करने की समस्या को कैसे सुलझाया जा सकता है।

इस समस्या का समाधान करने से पहले, हमें यह ध्यान देना आवश्यक है कि परमेश्वर कलीसिया के बढ़ने की आज्ञा नहीं देता। इसके बजाय परमेश्वर चाहता है कि कलीसिया विश्वासी बनी रहे। वह आज्ञा देता है कि हम विश्वास में बने रहकर उसके वचन का प्रचार करते और सिखाते रहें। यह सज़्भव है कि कलीसिया विश्वासी रहकर परमेश्वर के वचन का प्रचार करे और संज़्या के बढ़े बिना भी उसे प्रसन्न कर सके। तौभी, ज़्योंकि वह चाहता है कि कलीसिया बढ़े (गिनती में भी), इसलिए हमारे लिए विकास करने के तरीके ढूंढ़ना

अच्छी बात है। नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं यदि हम उन्हें व्यावहारिक रूप दें, तो उनसे कलीसिया के विकास में सहायता मिल सकती है। आइए कलीसिया के बढ़ने के इन सात कदमों की समीक्षा करते हैं।[3]

पग 1: समझें कि परमेश्वर कलीसिया का विकास चाहता है

पहली बात, हमें अहसास होना चाहिए कि मनुष्य जाति के लिए परमेश्वर की इच्छा यह है कि खोए हुओं का उद्धार हो (लूका 19:10; 2 पतरस 3:9)। परमेश्वर ने प्रत्येक जाति के खोए हुओं के लिए अपनी दिलचस्पी दिखाकर कलीसिया के विकास में अपनी दिलचस्पी को दिखा दिया है। उसने अब्राहम को बुलाया ताकि ''पृथ्वी के सारे घराने'' आशीष पाएं (उत्पत्ति 12:3)। उसने अपनी इच्छा का संकेत दिया कि उसके संदेश और राज्य का फैलाव सारे संसार में हो (यशायाह 11:9; हबक्कूक 2:14; दानिय्येल 2:35)। यीशु ने सिखाया कि राज्य राई के बीज और खमीर की तरह बढ़ेगा (मत्ती 13:31-33)। अपने अनुयायियों के लिए उसके आगे बढ़ने के आदेश ये थे कि ''सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ'' (मत्ती 28:19; तु. मरकुस 16:15; लूका 24:47)। प्रेरित ''पृथ्वी की छोर तक'' उसके गवाह थे (प्रेरितों 1:8)। अन्ततः, स्वर्ग में ''हर एक जाति, और कुल, और लोग और भाषा में से ... श्वेत वस्त्र पहिने, ... सिंहासन के साम्हने और मेम्ने के साम्हने'' खड़े होंगे (प्रकाशितवाक्य 7:9)।

कलीसिया के विकास में परमेश्वर की दिलचस्पी प्रेरितों के काम की पुस्तक में और भी स्पष्ट है, जहां उसने लूका की पुस्तक में कई जगह ''प्रगति रिपोर्ट'' शामिल करने की प्रेरणा दी। पिन्तेकुस्त के दिन लगभग 3000 लोग मसीही बने थे (प्रेरितों 2:41)। हर रोज उनमें लोग मिलाए जाने के कारण (2:47) शीघ्र ही कलीसिया में पुरुषों की संख्या 5000 हो गई थी (4:4) उसके बाद तो देह में बेशुमार पुरुषों और स्त्रियों को मिलाया जाता था (5:14) और चेलों की संख्या लगातार बढ़ती ही जा रही थी (6:1, 7; 9:31; 16:5)। अलग - अलग जगहों पर बनने वाले मसीही ''बहुतेरे'' (9:42), ''बहुत लोग'' (11:21), ''बहुत से लोग'' (11:24), ''बहुत'' (14:1), ''बहुत से चेले'' (14:21), ''कितने ... बहुतेरे ... और बहुत से'' (17:4), ''बहुत'' (17:12) और ''बहुत से'' (18:8) थे। परिणाम यह हुआ कि परमेश्वर का वचन बढ़ा और ''फैलता गया'' (12:24), ''सारे देश में फैलने लगा'' (13:49), और ''बलपूर्वक फैलता गया और प्रबल होता गया'' (19:20)।

खोए हुओं के लिए परमेश्वर की चिंता मसीह में भी स्पष्ट है, जो ''परमेश्वर हमारे साथ'' बना है। कलीसिया के विकास में यीशु की दिलचस्पी इस प्रकार दिखाई गई है:

मसीह को पसन्द नहीं है ...

- बिना मछली पकड़े शिकार
- दावत की खाली मेज
- बो कर न काटना

- फल न देने वाला अंजीर का पेड़
- खोई हुई भेड़ों को बाड़े में न लाना
- खोया हुआ सिज़्क़ा जिसे ढूंढ़ा तो जाए पर मिले नहीं
- न पकने वाली फसल
- प्रचार न मानना
- पिता के घर के बाहर रहने वाले पुत्र पुत्रियां।[4]

नि:संदेह, परमेश्वर केवल गिनती में बढ़ने में ही दिलचस्पी नहीं लेता बल्कि वह कलीसिया का आत्मिक विकास भी चाहता है (इफिसियों 4:11-16)। न ही वह हमसे यह इच्छा करता है कि हम गिनती बढ़ाने के लिए सच्चाई का बलिदान दें (यूहन्ना 17:17)। तौभी यदि हम खोए हुओं में परमेश्वर के प्रेम को बांटना चाहते हैं, तो हमें चाहिए कि जितने खोए हुओं को उनके उद्धार के लिए खोज सकें उन्हें खोजकर कलीसिया की गिनती बढ़ाने में भी दिलचस्पी लें।

पग 2: प्रार्थना

यदि कलीसिया बढ़ना चाहती है तो उसे प्रार्थना करनी चाहिए। ज़्यों? *पहली बात, कलीसिया का बढ़ना हम पर निर्भर नहीं है।* इसका बढ़ना सुनने वालों के वचन को मानने पर निर्भर है। बीज बोने वाले का दृष्टांत (मज़ी 13:1-23) हमें सिखाता है कि वही बीज बोने वाला एक ही ढंग का इस्तेमाल करते हुए उसी बीज को बोता है, और सुनने वालों के ग्रहण करने के अनुसार उसका परिणाम अलग - अलग होगा। यह परमेश्वर पर भी निर्भर है, ज़्योंकि बढ़ाने वाला वही है (1 कुरिन्थियों 3:6)। हमें वचन को मानने वाले मनों के लिए प्रार्थना करने की आवश्यकता है और यह भी कि परमेश्वर हमें अच्छी उपज दे। *दूसरा, प्रार्थना का असर होता है।* बाइबल सिखाती है कि यदि हम मांगें, ढूंढ़ें और खटखटाएं, तो हमें वह मिल जाएगा जिसकी हमें तलाश होती है (मज़ी 7:7, 8)। यदि हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मांग रहे हों तो हमें पता चल सकता है कि वह हमारी सुनता है और जो कुछ हमने मांगा था वह हमें मिल गया है (1 यूहन्ना 5:14, 15)। *तीसरा, यीशु ने हमें बताया कि "खेत के स्वामी से बिनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिए मज़दूर भेज दे" (मज़ी 9:38)।* यदि कलीसिया के अगुवे सचमुच कलीसिया को बढ़ता देखना चाहते हैं, तो उनके लिए कलीसिया को प्रार्थना के लिए उत्साहित करके आरज़्भ करने का सबसे अच्छा ढंग है।

पग 3: कलीसिया के बढ़ने में सहायता करने का निश्चय कर लें

कलीसिया के विकास के लिए, प्रत्येक सदस्य को बढ़ने में सहायता देने का निश्चय करना आवश्यक है। कलीसिया के विकास पर हुए अध्ययनों से संकेत मिला है कि जहां कहीं भी कलीसिया बढ़ती है, तो यह आम तौर पर एक व्यज़्ति (सामान्यतया मिशनरी,

प्रचारक या कलीसिया के अन्य अगुवे) के दृढ़ निश्चय के कारण ही होता है। परमेश्वर की सहायता से कलीसिया के विकास में दृढ़ निश्चय रखने वाले सदस्य, किसी भी मण्डली में विकास की प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

किसी सदस्य को कलीसिया के बढ़ने में सहायता आरज़्भ करने के लिए किसी के कहने की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। वह तुरन्त आरज़्भ कर सकता है। इसके लिए केवल मसीह की सहायता से वह कार्य करने का निश्चय करना है जो वह कर सकता है अर्थात विश्वासी रहना; आत्मिक उन्नति करना; निर्बलों को उत्साहित करना; भटके हुओं को वापस लाना; और खोए हुओं को जीतना। मसीही लोगों को ऐसे भले काम करने से कोई नहीं रोक सकता है। यदि मसीही लोग ये काम करते हैं, तो कलीसिया बढ़ेगी ही, दूसरे चाहे कुछ भी करें या करने में नाकाम रहें।

पग 4: कलीसिया के विकास के लक्ष्य तय करें

लक्ष्य निर्धारित करना[6] उस प्रक्रिया का एक भाग है जो पग चार से सात तक चलती रहती है। हम इसे यहां इसलिए ले रहे हैं, ज़्योंकि कलीसिया के विकास की योजना की प्रक्रिया के आरज़्भ में, कलीसिया को दूर तक के लक्ष्यों पर विचार करना आरज़्भ कर देना चाहिए। हर सदस्य को मण्डली की योजना और लक्ष्य निर्धारित करने के लिए बुलाई गई सभाओं में शामिल होने का अवसर मिलना चाहिए। कलीसिया के अगुवे अंतिम लक्ष्यों, दीर्घकाल के लक्ष्यों, लघु लक्ष्यों, और सहायक लक्ष्यों को बनाने तक सदस्यों के सुझाव से उनमें सुधार कर सकते हैं। इन लक्ष्यों में से विकास के लिए कलीसिया की योजना बन जाएगी। फिर उन सभी कार्यक्रमों का जो कलीसिया के कार्य का भाग बनते हैं उन लक्ष्यों के आधार पर मूल्यांकन किया जा सकता है। यदि उनसे कलीसिया के उद्देश्य पूरे होते हैं, तो उन्हें छोड़ उनमें सुधार किया जाना चाहिए और यदि उनसे लाभ नहीं होता तो उन्हें छोड़ दिया जाए।

पग 5: पिछले विकास और वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना

अगुओं को चाहिए कि कलीसिया के विकास की किसी विशेष योजना को प्रतिपादित करना आरज़्भ करने से पहले, यह निर्धारित कर लें कि कलीसिया ने पहले कैसे किया है और अब कैसे कर रही है। जब तक उन्हें यह पता नहीं होगा कि वे कहां पर हैं और इस समय ज़्या संसाधन उपलज़्ध हैं, तब तक वे वहां नहीं पहुंच सकते जहां जाना चाहते हैं।

पिछले विकास का विश्लेषण करें

पिछले विकास का विश्लेषण करने के लिए, पिछले वर्षों से वर्तमान तक कलीसिया के विकास को दर्शाता हुआ, विकास का एक चार्ट बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए पिछले पन्द्रह वर्षों में प्रत्येक वर्ष की औसतन रविवार प्रातः की उपस्थिति का इस्तेमाल करके ऐसा किया जा सकता है। फिर अगुवे देख सकते हैं कि ज़्या ग्राफ की रेखा ऊपर जाती है या नीचे, या बहुत से ''ऊपर'' और ''नीचे'' जाने के संकेत हैं। उसके बाद, वे यह तय

कर सकते हैं कि उस समय के दौरान कितने लोग कलीसिया में आए और कैसे आए। ज़्या वे बपतिस्मा लेने (कलीसिया के परिवारों या ''संसार'' से), सिखाए जाने से, या सदस्यता लेने आए थे? वे यह निर्धारित कर सकते हैं कि कितने लोग कलीसिया से बाहर गए और ज़्यों गए (मृत्यु, विश्वास से गिरने, या बदली होने के कारण)। अन्त में, वे पूछ सकते हैं कि ग्राफ में इतने ''ऊपर'' या ''नीचे'' ज़्यों हैं? कलीसिया नये सदस्यों को लाने में ज़्यों सफल या असफल रही? कलीसिया के सदस्यों की गिनती कम ज़्यों हुई? हो सकता है कि इसके कारण सेवक (कलीसिया के अगुवे, प्रचारक या सदस्य), कार्यक्रम, या क्षेत्र में जनसंज़्या (और इसका स्वभाव, यदि बदल गया है) हों।

पिछले विकास का विश्लेषण करने का ज़्या लाभ है? इससे कलीसिया को कुछ उत्साह मिल सकता है। अगुओं को पता चल सकता है कि कलीसिया वास्तव में उससे बेहतर कर रही है जैसा उन्होंने लोगों को बपतिस्मा देते समय और उन्हें विश्वास में रखने के समय सोचा था; उन्हें यह भी पता चल सकता है कि उनके कम विकास का कारण कुछ सदस्यों की मृत्यु और यह तथ्य हो सकता है कि बहुत से अन्य सदस्य स्थानांतरित होकर किसी दूसरे नगर में चले गए हों – जिसके लिए किसी भी प्रकार कलीसिया को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। इससे यह सुझाव भी मिल सकता है कि किन कार्यक्रमों को दोहराया जाए और भविष्य में कौन से कार्यक्रम छोड़ दिए जाने चाहिए। किसी भी दूसरी जगह की तरह, कलीसिया में भी, हो सकता है कि यदि हम अतीत से कुछ नहीं सीखते, तो हमें फिर से उसी को दोहराने का जोखिम उठाना पड़ेगा।

वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करें

कलीसिया की वर्तमान स्थिति के दो पहलुओं पर विचार किया जाना आवश्यक है अर्थात अपनी वास्तविक स्थिति और अपनी सामर्थ का मूल्यांकन करना आवश्यक है।

कलीसिया के अगुओं को चाहिए कि कलीसिया की वास्तविक स्थिति का विश्लेषण करने के लिए, यह पूछें कि, ''हम कैसे कर रहे हैं?'' इस चैक लिस्ट से विकास के तीन क्षेत्रों का मूल्यांकन करने में सहायता मिलेगी:

संज़्या के बढ़ने का विश्लेषण करें: (1) वर्तमान सदस्यता कितनी है और कितने लोग आराधना में उपस्थित होते हैं? (2) कितने लोगों ने हाल ही में वचन को स्वीकार किया है? (3) गत वर्ष के दौरान सदस्यता, उपस्थिति और वचन को ग्रहण करने वालों की गिनती ज़्या है? (4) गत वर्ष कितने लोग कलीसिया छोड़ गए हैं, और ज़्यों छोड़ गए हैं?

आत्मिक विकास का विश्लेषण करें: (1) उपस्थिति, चंदा, लोगों की भागीदारी और कुल मिलाकर मण्डली के मसीह जैसे व्यवहार का स्तर ज़्या है? (2) निजी तौर पर प्रत्येक सदस्य की स्थिति ज़्या है?

क्रमिक विकास का विश्लेषण करें: ज़्या कलीसिया प्रत्येक मसीही को उसे परमेश्वर द्वारा दिए गए गुणों का इस्तेमाल करने के लिए देह के बहुमूल्य गतिशील अंग बनने का अवसर दे रही है? (1) ज़्या नये सदस्य कलीसिया की गतिविधियों में भाग ले रहे हैं

(2) ज़्या नये अगुओं, शिक्षकों, सहायकों और गाने में अगुआई करने वालों को पिछले वर्षों में शिक्षा देकर उन्हें इस्तेमाल करने लगे हैं ? (3) ज़्या कलीसिया ने गुण विकसित करने के लिए साधन जुटाए हैं ? (4) वर्तमान सदस्यों में कौन से गुण हैं ? (5) ज़्या उनमें ऐसे गुण हैं जिनका इस्तेमाल नहीं हो रहा ? (6) ज़्या प्रत्येक सदस्य को लगता है कि उसे प्रभु की सेवा में उसकी योग्यताओं का इस्तेमाल करने का अवसर दिया गया है ?

कलीसिया की सामर्थ का विश्लेषण करने के लिए पूछें, ''हमारे पास सज़्भावनाएं ज़्या हैं ?'' कलीसिया की सामर्थ देखने के लिए कलीसिया के अगुओं को प्रश्न पूछने चाहिए:

सेवा के बारे में पूछें: इस समय सदस्यों की स्थिति ज़्या है ? मण्डली के सदस्य किस उम्र के हैं और उनमें पुरुषों की संज़्या ज़्या है और स्त्रियां कितनी हैं ? सदस्यों की सामाजिक – आर्थिक स्थिति, पढ़ाई – लिखाई, पृष्ठभूमि और काम – काज ज़्या है ? कलीसिया में परिवार कितने बड़े हैं और कलीसिया के परिवार एक दूसरे से कैसे जुड़े हुए हैं ? प्रत्येक सदस्य की दिलचस्पी, योग्यता तथा गुण ज़्या हैं ? कलीसिया में इस समय प्रत्येक सदस्य की भूमिका (उदाहरण के लिए, शिक्षक, डीकन, ऐल्डर) ज़्या है ? प्रत्येक सदस्य का योगदान पहले ज़्या था ?

सज़्भावनाओं के बारे में पूछें: आराधना के लिए बाहर से कितने लोग आते हैं ? बाइबल ज़्लासों के लिए आने वाले कितने बच्चे बाहर से आने वालों के हैं ?

कार्यक्रमों के बारे में पूछें: वचन का प्रचार करने व आत्माओं के उद्धार के लिए ज़्या किया जा रहा है और ये कार्यक्रम कितने प्रभावशाली हैं ?

जनसंज़्या के बारे में पूछें: जिस जगह पर कलीसिया स्थित है वहां का समाज कैसा है ? कैसे लोग सुसमाचार को ग्रहण कर सकते हैं ? वहां कौन से विशेष अवसर उपलज़्ध हैं ?

कलीसिया की वर्तमान स्थिति तथा इसकी सामर्थ से, कलीसिया के अगुओं को योजनाएं बनाने, प्रभावकारी कार्यक्रमों के बारे में सुझाव देने, और यह देखने में आसानी होगी कि प्रभु ने अवसर के कौन से द्वार खोले हैं।

पग 6: कलीसिया के विकास के लिए योजनाएं बनाएं

कलीसिया के अगुओं द्वारा लक्ष्यों के बारे में विचार करने और मण्डली की पिछली और वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करने के बाद, उन्हें चाहिए कि मण्डली की सहायता से, भावी विकास के लिए योजनाएं बनाएं।[6]

प्रचलित नीतियां

विकास के लिए बनाई जाने वाली योजनाएं सब मण्डलियों में पाई जाने वाली योजनाओं से मिलती – जुलती होंगी। उनमें से कुछ योजनाएं इस प्रकार हैं:

(1) *विजयी व्यवहार* अर्थात एक सकारात्मक भावना, विकास के लिए निर्णायक चरम अपनाएं। सदस्य ''शुभसमाचार'' तब तक नहीं फैलाएंगे जब तक उनके मन में स्थानीय कलीसिया का सकारात्मक स्वरूप नहीं होता।

(2) *मित्रता पूर्वक व्यवहार करने वाली कलीसिया* अर्थात बाहर से आने वालों का गर्मजोशी से स्वागत करने वाली कलीसिया बनें। ''मित्रतापूर्वक व्यवहार करने वाली'' कलीसिया बनने के लिए, अगुओं को चाहिए कि वे इसके सदस्यों, इसमें मिलने वाली सुविधाओं, इसके कार्यक्रमों तथा आराधना के ढंग को आगंतुकों अर्थात बाहर से आने वाले लोगों की नज़र से देखें और उनका स्वागत करने के लिए जो भी आवश्यक बदलाव हों (पवित्र शास्त्र की सीमाओं में रहकर) वे करें।

(3) *सुसमाचार प्रचार* – विशेष रूप से सुसमाचार के प्रचार में सबके योगदान देने की आवश्यकता पर ज़ोर दें। यदि कलीसिया खोए हुओं के मन बदलकर बढ़ना चाहती है, तो अगुओं को चाहिए कि वे सुसमाचार के प्रचार के महत्व पर ज़ोर दें। सदस्यों को यह समझ होनी चाहिए कि मत्ती 28:19, 20 ग्रेट कमीशन सबसे बड़ी आज्ञा है न कि ''सबसे बड़ा सुझाव।'' हमें यह विश्वास करना और सिखाना तथा ऐसे काम करना आवश्यक है कि घर में हो या बाहर, आत्माओं का उद्धार कलीसिया के लिए केवल विकल्प ही नहीं बल्कि मसीह की देह का प्रमुख कार्य है!

(4) *सबको भाग लेने के लिए उत्साहित करें।*[7] कलीसिया तभी बढ़ेगी जब प्रत्येक सदस्य अपने गुण का इस्तेमाल करते हुए इसमें भाग लेने के लिए अपनी निजी ज़िम्मेदारी समझेगा।

(5) *अलग – अलग ढंग अपनाएं।* कुछ खोज से यही पता चलता है कि कलीसियाएं एक ढंग का इस्तेमाल करने के बजाय अलग – अलग ढंगों का इस्तेमाल करके अधिक लोगों को मसीह में ला सकती हैं।

(6) *सुसमाचार मानने वाले लोगों की ओर ध्यान दें।* हर जगह कुछ लोग दूसरों की अपेक्षा सुसमाचार को जल्दी मानने वाले होते हैं। इन लोगों तक जाने की कोशिश करना अच्छी नीति है (आवश्यक नहीं कि सबके पास की जाने वाली सामान्य अपील को छोड़ दिया जाए)।

(7) *छोड़कर जाने वालों की समस्या को सुलझाने का यत्न करें।*[8] किसी भी कलीसिया में सदस्यों द्वारा छोड़कर जाने की समस्या का पूरी तरह से समाधान नहीं हो सकता, परन्तु कोई भी कलीसिया जब तक अपने विश्वासी सदस्यों को रोकने का यत्न नहीं करती तब तक वह विकास नहीं कर सकती।

(8) *आराधना सभाओं में जोश भरें।* जोश से भरी आराधना सभाओं वाली कलीसिया सदस्यों तथा गैर सदस्यों दोनों के लिए उत्साह देने वाली होती है। सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारी आराधना से परमेश्वर प्रसन्न होना चाहिए। पहली बार आने वाले लोगों पर कलीसिया का प्रभाव आराधना में उनके अनुभव से ही पड़ेगा। पहला प्रभाव असर करता है। यदि हमारी आराधना सभाएं बाहर से आने वालों के लिए लाभदायक हैं, तो वे हमारी शिक्षा को सुनने के लिए बार – बार आना चाहेंगे।

(9) *विज्ञापन।* विज्ञापन कलीसिया को बढ़ाने का माध्यम नहीं है, परन्तु इससे एक ऐसा वातावरण तैयार किया जा सकता है जिससे कलीसिया बढ़ सके।

विशेष नीति

विकास के लिए बनाई गई मण्डली की योजना केवल मण्डली के लिए ही होनी चाहिए। प्रत्येक मण्डली के लिए उसके अनुरूप नीति ज़्यों चाहिए ? ''विशिष्टता के नियम'' के कारण: हर कलीसिया के विकास का कारण उस मण्डली में पाए जाने वाले विशेष तथ्यों से जुड़ा होता है, आवश्यक नहीं कि उसे किसी दूसरी मण्डली में दोहराया जाए।

आम तौर पर लोग इसे समझते नहीं हैं। हमारे भाइयों में हर कलीसिया के विकास का उदाहरण यह मानकर दिया जाता है कि सब मण्डलियों को ''वैसे ही करना'' चाहिए जो कि किसी विशेष प्रकार के समाज में पाया जाता है और उसमें विशेष प्रकार के सदस्य होते हैं। इस मान्यता में समस्या यह है कि मण्डलियां अलग – अलग सामाजिक परिवेश में रहती हैं (जैसे जनसंज़्या के घनत्व, जातीय प्रबन्ध, औसतन उम्र, बढ़ती या घटती जनसंज़्या, आदि)। और अपने सदस्यता से समझौता करने वाले लोग (औसत उम्र, सामाजिक आर्थिक स्थिति, योग्यताएं, आदि)। यह मानना अवास्तविक है कि किसी नये बसे इलाके में, जहां बहुत से डॉज़्टर, वकील और इंजीनियर रहते हैं कलीसिया के विकास को किसी दूसरे राज्य के छोटे से कस्बे में बिना किसी सुधार के तबदील करके इस्तेमाल किया जा सकता हो।

कलीसिया के अगुवे किसी विशेष नीति पर कैसे पहुंचें ? पांच सुझाव हैं:

पहला, याद रखें कि आवश्यक नहीं कि योजना बनाने के लिए ''संगठित'' कार्यक्रम ही आवश्यक हैं। जितना कोई काम कम ''संगठित'' होगा उतना ही अच्छा है। ''संगठित कार्यक्रम'' केवल तभी शुरू किए जाने चाहिए यदि किसी और तरह से कलीसिया का लक्ष्य पूरा न होता हो।

दूसरा, कलीसिया में पाई जाने वाली सामर्थ पर ज़ोर दें। हर कलीसिया में कोई विशेष सामर्थ अवश्य होती है; इसके कार्यक्रम ऐसी सामर्थ को ध्यान में रखकर ही बनाए जाने चाहिए।

तीसरा, खोए हुओं में सुसमाचार के प्रचार, ज़रूरतमंदों की सहायता करने, कलीसिया को मज़बूत करने और प्रभु की आराधना करने के उज़म साधनों की खोज में रहें। आवश्यक नहीं कि किसी मण्डली द्वारा अपनाए गए सबसे अच्छे ढंगों को किसी दूसरी मण्डली में भी अपनाया जाए। हर बात में दूसरों की नकल करना ठीक नहीं है।

चौथा, सब बातों को ध्यान में रखकर योजना बनाएं। यदि ''संगठित कार्यक्रम'' आवश्यक हैं, तो उन्हें किया जाना चाहिए! किसी कार्यक्रम के लिए सफल योजना में निज़्न बातें शामिल हों: (क) कौन ज़्या करेगा, (ख) समय सारणी, (ग) धन कहां से आएगा, (घ) विज्ञापन और प्रसारण (ङ) कार्यक्रम समाप्त कैसे होगा, (च) उसके बाद ज़्या करना है।

पांचवां, योजना बनाते रहें। अगुओं को चाहिए कि वे इस बात का अवलोकन करते रहें कि ज़्या हो रहा है और भविष्य के लिए नई योजनाएं ज़्या होनी चाहिए। कोई भी कार्यक्रम चाहे वह सफल हो या असफल, अगले कार्यक्रम की तैयारी में सहायता के लिए एक अनुभव हो सकता है। हर वर्ष की योजनाएं अगले वर्ष की नीति बनाने के लिए आधार का काम करें।

पग 7: योजनाएं लागू करें

योजनाएं तब तक किसी काम की नहीं होती हैं जब तक वे केवल अगुओं के मन में या कागज़ों पर रहें। काम करने के लिए योजना बनाना आवश्यक है, परन्तु योजना पर काम करना भी आवश्यक है। तो ज़्या किया जाना चाहिए?

पहला, काम की योजना मिल जुल कर आरज़्भ करने से पहले बनाई जानी चाहिए। योजना में शामिल सब लोगों को साथ लें। फिर, यदि कोई संगठित कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है, तो किसी को उसकी ज़िज़्मेदारी दें और उसे अधिकार देकर उस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए धन उपलज़्ध कराएं। तीसरा, उस कार्यक्रम के बारे में मण्डली को बताते रहें; कलीसिया के किसी भी सफल काम के लिए कलीसिया को जानकारी देते रहना सबसे अच्छी बात है। चौथा, सदस्यों को उस काम में शामिल होने के लिए तैयार करने, समझाने व प्रेरणा देने के लिए कोशिश करें। पांचवां उसका प्रसार आवश्यक है। सदस्यों के बीच कार्यक्रमों का प्रसार करें, और कलीसिया के बाहर के लोगों में उसके विज्ञापन आदि से प्रचार करें। छठा, आरज़्भ से लेकर अन्त तक काम की निगरानी करते रहें। अच्छी शुरुआत ज़रूरी है, परन्तु इतना ही काफी नहीं है। हर काम की लगातार निगरानी करना आवश्यक है। प्रसार के साथ - साथ धीरज का विशेष महत्व है। कार्यक्रम के अंत की योजना बनाना भी आवश्यक है। परिणाम मिलने पर जश्न करें और उस भलाई के लिए जो उसमें से निकली है परमेश्वर का धन्यवाद करें। सातवां, किसी भी कार्यक्रम का पूरा होने के बाद उसका अवलोकन किया जाना आवश्यक है: ''हम इसे और अच्छी तरह कैसे कर सकते थे? यदि हम फिर से करें तो कितने अच्छे ढंग से कर सकते हैं?'' उस कार्यक्रम से मिलने वाले अनुभव से अगले प्रयास के लिए नई योजनाएं बनाई जा सकती हैं।

सारांश

किसी कलीसिया के लिए या कलीसिया के किसी अगुवे की सफलता के लिए संज़्या ही एकमात्र शर्त नहीं है। यदि किसी अगुवे की सफलता के लिए संज़्या ही मापदण्ड होती तो नूह और यिर्मयाह को विशेष रूप से असफल लोगों में गिना जाता। यीशु के जीवन के अंत में, जब वह क्रूस पर चढ़ाया जा रहा था और सब चेले उसे छोड़ गए थे जिनमें से एक ने उसे पकड़वाया और एक ने उसका इन्कार किया, दूसरों को यह लगना आसान होगा कि उसकी सेवकाई एक असफलता थी।

केवल एक आत्मा के उद्धार और कलीसिया के विकास में योगदान देते देखना कितने आनन्द की बात है! यह जानने के रोमांच की कल्पना करें कि आपके विश्वास और कर्मठ परिश्रम के कारण कलीसिया बढ़ी है, जिस कारण बहुत से लोग स्वर्ग में होंगे जो आपके परिश्रम के बिना नहीं जा सकते थे! यदि हम समझदारी और अच्छे ढंग से योजना बनाकर काम करें तो यह रोमांचकारी विचार हमारा अपना हो सकता है, ''हवा पीटते हुए'' नहीं (1 कुरिन्थियों 9:26), बल्कि ''बुद्धिमान राजमिस्त्री'' (1 कुरिन्थियों 3:10) की तरह जो

सावधान है कि कैसे ''नेव'' डालनी है, सबके लिए सब कुछ बनकर ताकि ''किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार'' हो जाए (1 कुरिन्थियों 9:22)।

पाद टिप्पणियां

[1]बुलेटिन ऑफ़ द टैंथ एण्ड द रॉकफोर्ड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, तुलसा, ओज़्लाहोमा (7 जून 1964) में डैरल जी. रिकर्ड, ''द लॉर्ड'स चर्च इज मारचिंग।'' [2]ज़्लेविल आर. यीकले, जूनि., ''चर्चज ऑफ़ क्राइस्ट ग्रोइंग अगेन,'' *द वर्ल्ड इवेंजलिस्ट* 19 (अगस्त 1990): 1. [3]इन पगों का सज़्बन्ध मुज़्यत: संज़्या में विकास से है, यद्यपि आत्मिक विकास के लिए सहायता की योजना बनाने के लिए भी इसी प्रक्रिया का इस्तेमाल किया जा सकता है, और इससे मिलने वाले सुझाव आत्मिक विकास को कम नहीं करेंगे। बेशक बाकी पाठ गिनती में विकास पर ज़ोर देता है, परन्तु हम यह संकेत नहीं देना चाहते कि यह विकास गुणात्मक विकास से अधिक महत्वपूर्ण है। [4]सी. वेयन ज़ंकल, *ग्रोइंग द स्मॉल चर्च - ए गाइड .फ़ॉर चर्च लीडर्स* (एलगिन, 3: डेविड सी. कुक, 1982), 23. [5]इस विषय पर अधिक जानकारी के लिए ''गोलसैटिंग'' देखिए। *ट्रुथ .फ़ॉर टुडे* (दिसज़्बर 1994, अंग्रेज़ी), 47-50. [6]पग 6 ''कलीसिया के विकास के लिए योजना बनाएं'' और पग 7 ''योजनाएं लागू करें'' पर अधिक जानकारी के लिए पृष्ठ 101 पर ''प्रबंधन'' पाठ देखिए। [7] ''भागीदारी को उत्साहित करना'' पाठ, पृष्ठ 162 देखिए। [8] ''छोड़कर जाने वाला की समस्या को सुलझाना'' पाठ, पृष्ठ 117 देखिए।